“"भारत छोड़ो आंदोलन दिवस" के पावन अवसर पर सभी देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं। इस ऐतिहासिक दिन 1942 में गांधी जी ने देशवासियों को "करो या मरो" का अमर मंत्र दिया था जिसने स्वाधीनता आंदोलन में नई जान फूंक दी और अंग्रेजों को अंततः 1947 में भारत छोड़ने पर विवश होना पड़ा।

इस अवसर पर भारत के उन वीर सपूतों और बेटियों की असंख्य क़ुर्बानियों को याद करें जिन्होंने भारत को औपनिवेशिक शासन से मुक्त कराने के लिए "भारत छोड़ो आंदोलन" में हिस्सा लिया।

आज हम भारत को गरीबी, अशिक्षा, असमानता, भ्रष्टाचार, जातिवाद, सांप्रदायिकता और लैंगिक भेदभाव जैसी सामाजिक कुरीतियों से मुक्त करने के लिए पुनः प्रतिबद्ध हों।

भारत की सभ्यता "सेवा और सद्भाव" के सनातन मूल्यों पर आधारित है और आज जब हम समाज में आपसी सौहार्द, भाईचारे, परस्पर सम्मान और साझा दायित्वों की भावना को बढ़ाने के प्रयास कर रहे हैं, तब यही सिद्धांत हमारा मार्गदर्शन करेंगे।

हम याद रखें कि हमारी वेशभूषा , भाषा और धार्मिक आस्थाओं में भिन्नता होने के बावजूद, हम "भारतीय" सबसे पहले हैं और हमें इसका गर्व होना चाहिए। ये सुंदर, समृद्ध भूमि हममें से हर किसी की है और एक बेहतर भविष्य के लिए अपनी यात्रा में हम सब साथ हैं।

आइए हम अपने जीवन में "भारतीयता" का स्वागत करें - चाहे वो मातृभाषा का प्रयोग हो या फिर पारंपरिक पहनावा, आइए भारतीय परंपराओं का आदर करें।

एक समावेशी, आत्मविश्वास से परिपूर्ण, आत्मनिर्भर भारत के लिए साथ साथ कदम बढ़ाएं।

जय हिंद!”